दैनिक भास्कर
उदयपुर ■ सोमवार 29 जुलाई, 2002 2

प्रबंध शिक्षा पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन सम्पन्न

■ नगर संवाददाता

उदयपुर, 28 जुलाई। राजस्थान विद्यापीठ के इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्ट्डीज (आईएसएस) द्वारा प्रबंध शिक्षा पर आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन रविवार को यहां होटल आनंद भवन में सम्पन्न हुआ।

समापन समारोह के मुख्य वक्ता इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फाइनेंस, नई दिल्ली के निदेशक प्रो.जे.डी. अग्रवाल ने कहा कि प्रबंध शिक्षा में उच्च स्तरीय गुणवत्ता स्थापित करने के लिए उत्कृष्ट मानवीय मूल्यों का होना जरूरी है। उन्होंने कहा कि प्रबंध संस्थानों में प्रत्येक वर्ग की अपनी अलग आवश्यकताएं एवं कठिनाईयां है। पश्चिम जो स्वयं असफल प्रबंध का नमूना है, के अंधानुकरण से भारत का विकास संभव नहीं है। प्रबंध छात्रों को वे बोले कि चहुंमुखी विकास के लिए भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के अनुरूप गुणवत्ता का निर्धारण करना होगा। प्रबंध शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए प्रो. अग्रवाल ने पाठ्यक्रमों, परीक्षा तंत्र एवं चयन की प्रक्रियां में समानीकरण की बात कही। उन्होंने प्रबंध शिक्षा को सिर्फ नौकरी पाने का पासपोर्ट नहीं मानकर उपलब्ध संसाधनों का उपयुक्त आधार बताया। प्रो.अग्रवाल ने सीखो और सीखाओं पद्धति पर जोर देते हुए कहा कि छात्रों को गतिशील खिलाड़ी और शिक्षकों को संचालक का कार्य करना चाहिए। समारोह में मुख्य अतिथि संभागीय आयुक्त ओ.पी. सैनी ने कहा कि उच्च स्तरीय प्रबंधन के लिए सृजनात्मकता, नवीनीकरण की क्षमता एवं चिंतन की प्रवृति का होना आवश्यक है। यह सोच का विषय है कि देश को क्या आवश्यकताएं है?

श्री सैनी ने कहा कि कार्य करने की प्रवृति नहीं होने से सामाजिक क्षमताओं में भी कमी आई है। दिन-प्रतिदिन की समस्याओं का सुप्रंबध नहीं होने से समस्याएं विकराल रुप धारण कर लेती है। उन्होंने कहा कि यदि प्रत्येक व्यक्ति कार्यशील हो जाए तो सौ करोड़ की आबादी वरदान साबित हो सकती है। समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रो.सी.पी. श्रीमाली ने कहा कि परिवर्तन कभी भी अर्कमण्यता से नहीं अपितु कर्मठता से आता है। उन्होंने कहा कि किसी भी प्रबंध तंत्र एवं विकास मॉडल का कोई अर्थ नहीं है यदि वह सामाजिक तौर पर प्रासंगिक नहीं हो। सम्मेलन अध्यक्ष प्रो. श्याम एस. लोढ़ा नें अतिथियों का स्वागत किया। समन्वयक डा. योगेश माहेश्वरी ने सम्मेलन का ब्यौरा प्रस्तुत किया। कार्यक्रम से पूर्व तकनीकी सत्र का अंतिम सत्र हुआ जिसकी अध्यक्षता प्रो. जे.एस.पंवार ने की। मुख्य वक्ता गुड़गांव के प्रो. सी.पी. श्रीमाली थे। संचालन डा. मुक्ता अरोड़ा ने किया।